Haryana Government Gazette

Published by Authority

© Government of Haryana

No. 34–2026] CHANDIGARH, WEDNESDAY, AUGUST 19, 2026 (SRAVANA 28, 1948 SAKA)

PART-I

Notifications, Orders and Declarations by Haryana Government

हरियाणा सरकार

विरासत तथा पर्यटन विभाग

अधिसूचना

दिनांक 14 अगस्त, 2026

संख्या 12/250–2024/पुरा/2865–73.– हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) की धारा 4 की उपधारा (3) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए तथा हरियाणा सरकार, विरासत तथा पर्यटन विभाग, अधिसूचना संख्या 12/250– 2024/पुरा/1589–97, दिनांक 8 मई, 2026 के प्रतिनिर्देश से, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा, नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारकों को संरक्षित संस्मारक के रूप में तथा उक्त अनुसूची के खाना 2, 3, 4, 5, 6 तथा 7 में यथा विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों को संरक्षित क्षेत्र के रूप में घोषित करते हैं:–

अनुसूची

प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम	पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम	गांव/शहर का नाम	तहसील/जिला का नाम	संरक्षणाधीन राजस्व खसरा/किला संख्या	संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र कनाल–मरला	स्वामित्व	विशेष कथन
1	2	3	4	5	6	7	8
लुहारी बावडी 14वीं–15वीं शताब्दी पूर्व	लुहारी बावडी 14वीं–15वीं शताब्दी पूर्व	लुहारी नजदीक पटौदी शहर	झज्जर	किला संख्या 191 खेवट संख्या 996	0–15	निजी स्वामित्व (भीम सिंह पुत्र श्री भगवान आदि)	लुहारी बावडी, जिसे मुगलई बावडी के नाम से भी जाना जाता है, झज्जर जिले के लुहारी गाँव में स्थित एक उल्लेखनीय बावड़ी है। यह ऐतिहासिक संरचना अपनी तीन मंजिला डिजाइन के लिए उल्लेखनीय है, जो तुगलक वंश की स्थापत्य शैली की विशेषताओं को प्रदर्शित करती है। बावडी में दोनों तरफ छः आले बने हुए है, साथ ही सभी स्तरों पर दो सीढ़ीयां हैं, जो कुएँ की गहराई तक पहुँच को सुविधाजनक बनाती हैं। कुएँ के प्रवेश द्वार को एक बड़े नुकीले मेहराब से सजाया गया है, जो उस काल की स्थापत्य शैली पर जोर देता है। कुआँ स्वयं अष्टकोणीय आकार का है और इसकी गहराई लगभग 40 फीट है। पत्थर

							के ब्लॉकों का उपयोग करके निर्मित लुहारी बावडी न केवल एक कार्यात्मक जल भंडार के रूप में कार्य करती है, बल्कि उस समय की इंजीनियरिंग और स्थापत्य कला के लिए एक उत्कृष्टता का प्रमाण प्रस्तुत करती है। इसका डिजाइन तुगलक युग की जटिल शिल्प कौशल और सौंदर्य संवेदनाओं को दर्शाता है, जो इसे एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थल बनाता है।

अमित कुमार अग्रवाल,
आयुक्त एवं सचिव, हरियाणा सरकार,
विरासत तथा पर्यटन विभाग।

HARYANA GOVERNMENT

HERITAGE AND TOURISM DEPARTMENT

Notification

The 14th August, 2026

No. 12/250-2024/pura/2865-73.— In exercise of the powers conferred under sub-section (3) of section 4 of the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964) and with reference to Haryana Government, Heritage and Tourism Department, notification No. 12/250-2024/pura/ 1589-97, dated the 8th May, 2026, the Governor of Haryana hereby declares the ancient and historical monuments specified in column 1 of the Schedule given below to be a protected monument and archaeological site and remains as specified in columns 2, 3, 4, 5, 6 and 7 of the said Schedule to be a protected area: -

SCHEDULE

Name of ancient and historical monuments	Name of archaeological sites and remains	Name of village/ city	Name of tehsil / district.	Revenue Khasra/ Kila number under protection.	Area to be protected Kanal-Marla	Ownership	Remarks
1	2	3	4	5	6	7	8
Luhari Baoli 14th-15th Century CE	Luhari Baoli 14th-15th Century CE	Luhari, Near Pataudi Town	Jhajjar	Kila No. 191 Khewat No. 996	0-15	Private ownership (Bhim Singh S/o Bhagwan etc.)	Luhari Baoli, also known as Mughlaai Baoli, is a remarkable stepwell located in the village of Luhari, in the Jhajjar district. This historical structure is notable for its three-storey design, showcasing architectural elements characteristic of the Tughlaq dynasty. The baoli features six niches on either side, complemented by two stair bays on all levels, facilitating access to the well's depths. The entrance to the well is adorned with a large pointed arch, emphasizing the architectural style of the period. The well itself is octagonal in shape and has a substantial depth of approximately 40 feet. Constructed using stone blocks. Luhari Baoli not only serves as a functional water reservoir but also stands as a testament to the engineering and architectural prowess of the time. Its design reflects the intricate craftsmanship and aesthetic sensibilities of the Tughlaq era, making it an important cultural and historical landmark.

AMIT KUMAR AGRAWAL,
Commissioner and Secretary to Government Haryana,
Heritage and Tourism Department.

12758—C.S.—H.G.P., Pkl.